संदर्भ

प्रारंभिक शिक्षा में नाट्य गतिविधियां

❑ राघवेन्द्र रावत

प्रारंभिक स्तर पर बच्चों से नाटक करवाने का प्रचलन जहां निजी स्कूलों में बढ़ता जा रहा है, वहीं मुख्यधारा के सरकारी स्कूल अभी भी ऐसी गतिविधियों के प्रति उदासीन हैं । दूसरी ओर बच्चों के लिए शहरों में ग्रीष्मकालीन नाट्य–शिविर आयोजित किये जाने लगे हैं । लेकिन निजी स्कूलों के नाटक हों या शिविरों के, इनमें कुछ अतिरेक स्पष्ट परिलक्षित होते हैं । जैसे या तो ये नाटक छिछले मनोरंजन प्रधान होते हैं या फिर उपदेशात्मक । बच्चे के व्यक्तित्व विकास में अन्य ललित कलाओं की भांति नाट्य गतिविधियों की जो महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है, उसके प्रति इनमें गंभीरता नजर नहीं आती ।

आज बच्चे किताबों के बोझ तले दबे हुए हैं । यह हमारी शिक्षा प्रणाली का ही दोष है कि बच्चे स्कूल स्तर तक भारी होमवर्क का दबाव झेलते हैं । बडे पैमाने पर बेकारी और नौकरियों के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा के चलते अभिभावकों का परीक्षा परिणाम पर ध्यान केन्द्रित करना स्वाभाविक ही है। आज माध्यमिक स्तर पर 80-90 प्रतिशत अंक अर्जित करने वाले छात्र भी भविष्य के प्रति आश्वस्त नजर नहीं आते।

शिक्षा के दो पहलू हैं एक संज्ञानात्मक पक्ष और दूसरा भावात्मक पक्ष । संज्ञानात्मक शिक्षण के तहत भाषा, गणित, भूगोल, समाजशास्त्र एवं विज्ञान आदि का अध्ययन कराया जाता है जबकि भावात्मक शिक्षण में विभिन्न कलाओं के माध्यम से बच्चे के व्यक्तित्व का विकास करना होता है । विभिन्न कलाओं में चित्रकारी, संगीत, नाटक, नृत्य, दस्तकारी एवं खेल आदि गतिविधियां आती हैं जो बालक के व्यक्तित्व विकास में सहायक होती हैं । इनमें से कुछ कलाएं व्यक्तित्व के एक पक्ष को उभारती हैं जैसे चित्रकला, नृत्य, संगीत आदि जबकि कुछ कलाएं बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करने में सहायक होती हैं जिनमें नाटक प्रमुख है । नाटक एक ''कम्पोजिट आर्ट'' है जिसमें गीत, संगीत, कहानी, संवाद और अभिनय आदि तत्व एक साथ मौजूद होते हैं । ये सभी कारक संयुक्त रूप में ज्यादा प्रभावित करते हैं।

शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों द्वारा बहुत पहले से यह महसूस किया जाने लगा था कि शिक्षा बच्चे के संतुलित विकास से संबंधित होनी चाहिए । ऐसी शिक्षा हो जो छात्र को व्यक्तिगत चिंतन के अवसर प्रदान करे। साथ ही शिक्षा ऐसी प्रक्रिया हो जिसमें हर व्यक्ति भाग ले सके । नवें दशक के पूर्वार्द्ध में इस सोच को भारतीय शिक्षाविद एवं बुद्धिजीवियों में और बल मिला। इसी के चलते नाटक के माध्यम से बच्चों के व्यक्तित्व - विकास के प्रयोग शुरू हुए ।

नाट्य कला द्वारा शिक्षण बहुधा अनौपचारिक और सृजनात्मक होता है । विशिष्ट आयु वर्ग के बच्चों की भाषा, मानसिकता एवं रुचियां भिन्न होती हैं । रंगमंचीय नाटक प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिए उपयुक्त नहीं होते । कुछ शिक्षाविदों के अनुसार तेरह-चौदह वर्ष से कम आयु के बच्चों को विद्वतापूर्ण संवादात्मक नाटकों में अभिनय नहीं करना चाहिए क्योंकि ये प्रौढ़ क्रियाएं हैं और बच्चों की आत्माभिव्यक्ति के स्वाभाविक माध्यम नहीं हैं। इसके विपरीत नाट्य गतिविधियां बच्चे की नाटकीय क्रीड़ा पर आधारित होती हैं जिनमें वह भिन्न-भिन्न लोगों, पशुओं, मशीनों तथा उन वस्तुओं के रूप धारण कर सकता है जिन्हें उसने गौर से देख रखा है। 5-6 वर्ष तक के बच्चों के खेलों को अगर ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि वहां मम्मी पापा बन कर बच्चों के साथ व्यवहार, शिक्षक बन कर छात्र-छात्राओं के प्रति व्यवहार आदि कार्य व्यवहार का बच्चों द्वारा नकल के जरिए प्रस्तुतिकरण होता है । छह वर्षीय मान्या अभिनीत नाटक देखकर उन पात्रों का घर पर अभिनय करके बताती है ।

नाट्य गतिविधियों या बाल-नाट्य को इधर सृजनात्मक नाटक कहा गया है । सृजनात्मक नाटक की शैली में *करो और सीखो* के जरिए बच्चे की नैसर्गिक प्रतिभा को विकसित किया जा सकता है।

कठपुतली नर्तन एवं सृजनात्मक नाटक विशेषज्ञ मेहर आर. कॉन्ट्रेक्टर के शब्दों में कहें तो सृजनात्मक नाटक का अर्थ अपनी कल्पना का प्रयोग करना तथा अपने ही उत्तरदायित्त्व पर अपने विचारों को क्रिया रूप देना है। सृजनात्मक नाटक में क्रियाएं तथा संवाद दोनों ही आशुरचित होते हैं। यह एक अन्तरंग सामूहिक क्रिया है जिसमें प्रेरक तथा बच्चे मिलकर कहानियों का नाटकीकरण करते हैं। बच्चे मूकाभिनय व एकाभिनय के माध्यम से पात्रों के व्यवहार को समझते और समझाते हैं । बालिका मान्या अपनी सहज अभिव्यक्ति से पूरे परिवार को चाय बना कर पिलाने का

अभिनय करती है और उद्घोषिका बन कर 15 मिनट का एक कार्यक्रम ''आटा बेलू'' (यह नाम उसी का दिया हुआ है।) प्रस्तुत करती है । अर्थात नाटक के जरिए कल्पनाशीलता और आत्मविश्वास दोनों का इस उम्र में विकास हो रहा है ।

1989 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय दिल्ली में 'थियेटर इन एजूकेशन' (टी.आई.ई.) की स्थापना शैक्षणिक विषयों तथा बच्चों की मांग से संबंधित विषयों पर कार्यशालाएं एवं नाटक तैयार करने के उद्देश्य से की गई थी । टी. आई. ई. कम्पनी के प्रशिक्षित अभिनेता-अध्यापकों के दल विभिन्न स्तरों पर कार्यरत हैं । ये विभिन्न आयु सीमा के बच्चों के लिए नाटक प्रदर्शित करते हैं । टी. आई. ई. के अनुसार ये नाटक बच्चों में मौजूदा समाज के रवैये के प्रति प्रश्नात्मक रुख अपनाने की भावना जाग्रत करते हैं । इन सभी नाटकों में बच्चों के नजरिये से समस्याओं को देखा जाता है ।

थियेटर इन एजुकेशन द्वारा एक प्रयोग और किया जाता है । उसमें पारंपरिक रंगमंच के लिए कोई स्थान नहीं है । इसमें कलाकारों के साथ साथ दर्शक भी भाग लेते हैं और कई बार दर्शकों की भागीदारी नाटक की पटकथा को ही परिवर्तित करके विकसित करती है। आशुरचित कहानियों और आशुरचित संवादों की संरचना से नाटक तैयार किए जाते हैं तथा काफी सुधारों के बाद पटकथा विकसित होती है अर्थात ''इम्प्रोवाईजेशन'' की प्रक्रिया सामान्य नाट्य कार्यशाला के साथ साथ शिक्षण में विशेषरूप से महत्वपूर्ण होती है। यह कल्पनाशीलता के साथ साथ सृजनात्मक प्रतिभा को उभारता है । समूह में रहते हुए भिन्न भिन्न पात्रों के लिए कहानी के'इम्प्रोवाईजेशन' में बालक संवाद व मुद्राएं खुद ही सृजित करते हैं जिससे उसके आत्म विश्वास में भी बढ़ोतरी होती है ।

'थियेटर इन एजूकेशन' में एक तकनीक इस्तेमाल की जाती है जिसका नाम है ''हॉट सिटिंग''। इसमें हर नाट्य दल के हर सदस्य को दूसरों के सन्मुख तब तक स्वयं के बारे में बोलने दिया जाता है जब तक कि नाट्य दल चाहे । उस सदस्य से उसके जीवन के बारे में सवाल पूछे जाते हैं । हर दल के सदस्यों का एक दूसरे को जानना तथा उनकी कमियों या विशेषताओं को पहचानना जरूरी होता है क्योंकि उन्हें पटकथा समूह में विकसित करनी होती है । जिन बच्चों के लिए यह कार्यक्रम किये जाते हैं उनके साथ मधुर संबंध स्थापित करने में यह तकनीक बहुत कारगर सिद्ध होती है। शिक्षा में नाटक उपदेशात्मक न होकर चिंतन के विकल्प खुला रखने वाला होना चाहिए । कई कार्यक्रमों में जो एक बडी खामी होती है वह है प्रत्येक विषय को नाटक के माध्यम से पढ़ाना । हर विषय को नाटक के जरिए सम्पूर्णता में नहीं समझाया जा सकता। गणित और व्याकरण जैसे विषयों के लिए यह अव्यावहारिक है । नाटक का प्रयोग भावनात्मक शिक्षण तक सीमित होना चाहिए ।

मेहर आर. कान्ट्रेक्टर का मत है कि सृजनात्मक नाटक के जरिए शिक्षण में औपचारिक रंगमंचीय तामझाम की जरूरत नहीं होती । जैसा पूर्व में कहा गया यह उनके लिए नाटक खेल खेल में सीखना है । सोवियत लेखक एवं समीक्षक अनातौली लुनाचार्स्की का कहना है कि बच्चा जब खेल रहा होता है तभी वह जीता है, तभी अभ्यास करता है, तभी उसके मनोमस्तिष्क, शरीर और आत्मा का विकास होता है । खेल स्वत: स्फूर्त होता है अत: बच्चों के खेलने का तरीका 'भागीदारी' और सामूहिक प्रक्रियाओं का अच्छा उदाहरण है ।

ग्रिप्स थियेटर के नाटक 'मेक्स एण्ड मिली' के हिन्दी अनुवाद रानी और पिन्टु का मंचन टी. आई. ई. द्वारा किया जाता रहा है । टी. आई. ई. के कुछ अन्य नाटक *ऊंच-नीच*, किताब और *पिस्तौल* और *दीवार* बच्चों द्वारा तैयार कराये गये हैं । किन्तु अभी तक ये नाट्य प्रस्तुतियां या नाट्य कार्यशालाएं शहरों अथवा महानगरों के नजदीकी कस्बों तक ही सीमित हैं ।

टी. आई. ई. नाटकों और कार्यशालाओं के जरिए बच्चों को आपसी सहयोग तथा भागीदारी द्वारा कल्पनाशील, जिज्ञासु तथा आत्मविश्वासी व्यक्ति के रूप में विकसित करने का प्रयास करती रही है। किन्तु पिछले 20 वर्षों में जो काम हुआ है वह बहुत छोटे स्तर पर हुआ है उसमें विस्तार और प्रयोग की बहुत गुंजायश है । टी. आई. ई. के स्थाई सदस्य हर शुक्रवार की प्रात: दिल्ली के विभिन्न स्कूलों में जाते हैं तथा 6 बच्चों तथा एक या दो अध्यापकों वाले दल के साथ काम करते हैं । इससे अध्यापकों को भी यह अनुभव होता है कि खेल में नाट्य गतिविधियों को किस प्रकार प्रयोग में लाया जा सकता है ताकि बच्चों को सोचने, निर्णय लेने तथा अपने निर्णयों का उत्तरदायित्व समझने में ये गतिविधियां सहायक हो सकें । इस प्रयोग को ''फ्रायडे क्लब'' का नाम दिया गया है।

इस संदर्भ में मेहर आर. कान्ट्रेक्टर का मत है कि सृजनात्मक नाटक के जरिए शिक्षण में औपचारिक रंगमंचीय तामझाम की जरूरत नहीं होती । जैसा पूर्व में कहा गया यह उनके लिए नाटक

खेल खेल में सीखना है । सोवियत लेखक एवं समीक्षक अनातौली लुनाचार्स्की का कहना है कि बच्चा जब खेल रहा होता है तभी वह जीता है, तभी अभ्यास करता है, तभी उसके मनोमस्तिष्क, शरीर और आत्मा का विकास होता है । खेल स्वत: स्फूर्त होता है अत: बच्चों के खेलने का तरीका 'भागीदारी' और सामूहिक प्रक्रियाओं का अच्छा उदाहरण है ।

प्रसिद्ध लेखक पीटर स्लेड ने अपनी पुस्तक 'बाल नाटक' के परिचय में लिखा है कि कहानी रचना एक ऐसी प्रक्रिया है जो ''विचारों का खेल खेलना'' है । स्कूली दिनों में एक नाट्य गतिविधि ''मॉक पार्लियामेन्ट'' हमारे द्वारा अध्यापक के मार्गदर्शन में तैयार की गई जिसके सभी संवाद आशुरचित थे । इसके माध्यम से संसदीय कार्यप्रणाली को सहज और रोचक ढंग से प्राथमिक स्तर पर ही समझा गया । यह एक अनूठा प्रयोग था जो विषय शिक्षण के साथ साथ व्यवहारिक ज्ञान भी देता था। सृजनात्मक नाटक समूह में व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है । इसमें स्वतंत्रता तथा अनुशासन दोनों ही हैं क्योंकि सभी सदस्य साथ साथ काम करते हैं और प्रत्येक की भूमिका सामूहिक क्रियाओं से संबद्ध होती है ।

हालांकि 'थियेटर इन एजूकेशन' के सदस्य तथा उससे जुड़े सदस्य दिल्ली से बाहर जाकर सप्ताह में एक बार विभिन्न स्कूलों में काम करते हैं । इस कार्यक्रम के तहत स्वयं अपने नाटकों का विकास कर वर्ष के अन्त में उन्हें मंचित करते हैं । मगर साथ ही जो बच्चे वर्ष भर नहीं आ सकते, उनके लिए कम्पनी गर्मी की छुट्टियों में एक माह की कार्यशाला आयोजित की जाती है । जवाहर कला केन्द्र, जयपुर द्वारा भी ग्रीष्मकालीन कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं किन्तु यह महज औपचारिकता भर होती है। केन्द्र की कार्यशालाओं में प्रशिक्षण देने वाले रंगकर्मी स्वयं नाटक द्वारा शिक्षण के पक्ष को बहुधा नहीं समझते, न ही प्रशिक्षण में यह प्राथमिकता परिलक्षित होती है । वे वस्तुत: बच्चों से 'नाटक' करवाते हैं ।

यहां यह उल्लेखनीय है कि शिक्षा में नाटक का प्रयोग करते हुए बहुधा उत्सव धर्मिता हावी होती है जिससे उसके मूल उद्देश्य की प्राप्ति असंभव है । जैसे ही ग्रीष्मकालीन अवकाश आरंभ होता है देश के निजी शिक्षण संस्थानों में नाट्य कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है जिसमें भाषा, आंगिक व्यायाम, उच्चारण आदि क्रियाओं से प्रारंभ कर नाट्य प्रस्तुति के चरम बिन्दु तक पहुंचा जाता है। इसके पीछे बच्चे के व्यक्तित्व के भावात्मक विकास की चिंता कम वरन् शिक्षा के व्यवसायीकरण की अवधारणा अधिक होती है । इसी के चलते ऐसे बाल नाट्य शिविरों के औचित्य पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है ।

सृजनात्मक नाटक की प्रस्तुतियां और नाट्य कार्यशालाएं ग्रामीण स्कूलों में भी की जानी चाहिए । ग्रामीण स्कूलों में औपचारिक शिक्षण के शुष्क परम्परागत तरीके की वजह से पढाई छोड़ने वाले बच्चों का रुख शिक्षा की ओर मोड़ने का कार्यभार सबके सामने है। प्राथमिक कक्षाओं में नाटक को कला के अन्तर्गत एक विधा के रूप में उसी तरह पढ़ाया जाये जिस तरह अन्य कोर विषय समूह पढ़ाये जाते हैं । इसका पाठ्यक्रम तैयार करते समय नाटक के इतिहास, शास्त्रीय आधार व रंगमंच की गूढ़ तकनीकों को समझाने का बोझ बच्चे पर न डाला जावे बल्कि इसे स्वर, उच्चारण आंगिक व्यायाम एवं इम्प्रोवाइजेशन तक ही सीमित रखा जावे जिससे बहु आयामी अभिव्यक्ति की सुदृढ़ नीवं कल्पनाशीलता एवं सृजनात्मकता के माध्यम से रखी जा सके।

नाट्य तत्व के सृजनात्मक पक्ष को समझकर नाटक के जरिए बच्चों के मन व शरीर में समन्वय की क्षमता विकसित कर सकें, इस सबके लिए अध्यापकों की प्रशिक्षण कार्यशालाएं नियमित एवं व्यापक स्तर पर लगाई जानी चाहिए । इन कार्यशालाओं में विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए । इन कार्यशालाओं का आयोजन जिला स्तर से लेकर ब्लॉक स्तर तक किया जाना चाहिए । नाट्य संस्थाएं एवं शिक्षा में कार्यरत गैर सरकारी संस्थाएं भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण सहयोग कर सकती हैं । प्रशिक्षण कार्यशालाओं में मुखौटा निर्माण, बच्चों को कहानी सुनाने की कला, संवाद शैली, रंगमंच गतिविधियां आदि विधाएं शामिल की जा सकती हैं । नाट्य प्रस्तुतियों में बच्चों को स्वस्थ आत्माभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किए जायें । मानवीय आचरण के श्रेष्ठ मूल्यों वाले नाटक खेलने से मन पर इसका प्रभाव बार बार दिये गए उपदेशों से कहीं गहरा होता है । दुष्ट पात्रों की भूमिका निभाना बच्चों में आक्रामकता से घृणा तथा अन्य अवांछनीय भावनाओं का शमन करता है जिनके अन्दर रहने से पैदा हुई कुंठा हानिकारक होती है ।

विनी फ्रेड वार्ड की *प्ले मेकिंग विद् चिल्ड्रन* (न्यूयार्क, एपलटन सेंचुरी क्राफ्टस 1945), गेरल डिनसिक की *क्रियेटिव ड्रामेटिक्स - एन आर्ट फार चिल्ड्रन* (न्यूयार्क, हॉपर एंड रो 1958) रूथलीज तथा गेरलेडिन सिक की पुस्तक *क्रियेटिव ड्रामेटिक्स इन होम - स्कूल एण्ड कम्यूनिटी* (न्यूयार्क हॉपर एण्ड ब्रदर्ज 1952) में कुछ ऐसी अध्ययन सामग्री है जो भावनात्मक शिक्षण में सृजनात्मक नाटक के प्रयोग करने में कारगर सिद्ध हो सकती है । कार्यशालाओं में प्रशिक्षु अध्यापकों के बीच ये पुस्तकें पढ़ी जा सकती हैं। पंचतन्त्र की कहानियां, अकबर बीरवल, लोक कथाएं, अलीबाबा और चालीस चोर, प्रेमचन्द की कहानियां और स्वतंत्रता संग्राम के वीर शहीदों की जीवनियां भी नाट्य गतिविधियों के आधार के रूप में उपयोगी हो सकती हैं । ◆